

5. उज्ज्वल भविष्य के लिए

— शंकर लाल शर्मा

कुष्ठ रोगियों की एक महासभा में बाबा आमटे ने कहा — ‘देखो, समाज ने हमारी सहायता की है ना ? हमें इसका बदला चुकाना चाहिए।’

‘आप ठीक कहते हैं। हम बदला अवश्य चुकाएंगे। पर यह कैसे संभव होगा ?’ बाबा ने कहा, ‘इधर कोई कॉलेज नहीं है। तुम्हारे बच्चे, गांव के बच्चे आगे पढ़ नहीं पाते। पढ़ते नहीं इसलिए आगे नहीं बढ़ पाते। अतः हम सब मिलकर यहां एक कॉलेज बनाएंगे।’

बाबा की बात ठीक थी। पर इस घने जंगल में कॉलेज बनाने के लिए लाखों रुपए चाहिए, इतना धन कहां से आएगा ? इधर कुष्ठ धाम के पास पढ़ने-पढ़ाने वाले भी आना पसन्द नहीं करेंगे।

उन दिनों कुष्ठ धाम देखने स्विटजरलैंड वासी डॉक्टर स्नेलमन आए हुए थे। वे एक संस्था के उपमहासचिव थे जिसका नाम था — ‘स्विस तथा विदेश।’ बाबा आमटे ने डॉ. स्नेलमन से कॉलेज योजना की चर्चा की, कॉलेज की जगह बताई और कहा — ‘छः महीने बाद यहां एक कॉलेज खुल जाएगा।’

डॉ. स्नेलमन को विश्वास नहीं हुआ। वे हँसते हुए बोले — ‘नहीं, नहीं मिस्टर आमटे। ऐसा तो हमारे देश में भी नहीं हो सकता। इतने कम समय में कॉलेज ? असंभव है।’

बाबा भी हंसने लगे। उन्हें यह चुनौती लगी। चुनौतियों से जूझने में तो उन्हें सदा आनन्द आता है। उन्होंने डॉ० स्नेलमन से कहा — ‘ऐसी बात है तो कॉलेज की नींव आज ही खुदेगी और आप ही पहली कुदाल चलाएंगे।’

डॉ. स्नेलमन बाबा के आत्म-विश्वास से बहुत प्रभावित हुए। बोले — ‘मिस्टर आमटे। यदि छः महीनों में भवन बन गया, उसमें छात्र भी आ गए, प्राध्यापक भी आ गए तो फिर आपके चमत्कार को नमस्कार। हमारी संस्था आपके कॉलेज को दो लाख रुपए देगी। उससे विज्ञान शिक्षा के लिए उपकरण खरीदिएगा।’ उन्हें यकीन था कि इस अल्पकाल में यह कार्य पूरा नहीं हो सकेगा। छः महीने बाद आने का वचन देकर डॉ. स्नेलमन चले गए।

आनन्दवन कुष्ठ धाम के हज़ारों हाथ काम में जुट गए। एक ओर भवन निर्माण का कार्य चला और दूसरी ओर फर्नीचर बनने लगा। बाबा आमटे ने इस बीच अध्यापक नियुक्त किए और छात्र जुटा लिए।

छः महीने बाद डॉ. स्नेलमन फिर आए। उनकी नज़र एक बोर्ड पर पड़ी जिस पर लिखा था — ‘आनन्द निकेतन महाविद्यालय।’

बाबा आमटे ने कॉलेज के प्राचार्य गोपीनाथ राय से उनका परिचय करवाया। फिर बारी-बारी महाविद्यालय के कला, विज्ञान, वाणिज्य तथा कृषि विभाग दिखाए। छः महीने पहले जहां वीरान जंगल था, झाड़-झंखाड़ और चट्टाने थीं, वहीं आज महाविद्यालय था। छात्रों का शोर था।

डॉ. स्नेलमन ने बाबा से पूछा - 'क्या, आपके पास अलादीन का चिराग है ?'

बाबा ने हंसकर कहा - 'हां, मेरे पास है।'

उन्होंने आनन्दवन के आदिवासियों और कुष्ठ रोगियों की ओर इशारा किया।

महाराष्ट्र में नागपुर के पास बरोरा में आनन्दवन है जिसे मुरलीधर देवीदास आमटे ने बसाया है। बाबा आमटे समाज सेवक हैं। उनका जन्म 26 दिसंबर 1914 को हिंगनघाट में हुआ था। पिता कर्मकांडी ब्राह्मण थे। उनकी बड़ी ज़मींदारी थी और सरकारी अधिकारी भी थे। बचपन बड़ी शान-शौकत में बीता। पिता ने अनुशासन सिखाया और शिक्षा दी। उनके जीवन को एक दिशा दी मां के संस्कारों ने जो स्वयं तो पढ़ी लिखी नहीं थीं, पर बहुत अच्छी शिक्षिका थीं।

अपनी शिक्षा पूरी कर उन्होंने 1936 में मध्यप्रदेश के दुर्ग शहर में वकालत शुरू की। चार वर्ष पश्चात् वे वरोरा आ गए और वहीं वकालत के साथ-साथ जमींदारी का काम भी देखने लगे। देश भर में स्वतन्त्रता आन्दोलन चल रहा था। आमटे को गांधी जी से बड़ी प्रेरणा मिली। आचार्य विनोबा भावे से भी वे प्रभावित हुए। वे भी गांधी के अनुयायी बन स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने लगे और जेल भी गए। गांधी जी ने उन्हें 'अभय साधक' की उपाधि दी।

बाबा आमटे ने सात एकड़ भूमि में एक आश्रम बनाया- श्रम आश्रम। इस आश्रम में उनके साथ पच्चीस-तीस लोगों का परिवार था। इनमें सभी जाति के लोग थे। खेती शुरू की गई। सभी काम करते और सांझी आय से खर्च चलाते।

1949 में बाबा आमटे ने पैतृक संपत्ति त्याग दी। उन्होंने एक महारोगी सेवा समिति की स्थापना की। सरकार ने पचास एकड़ जमीन दी जिस पर 'आनन्दवन' बसा है। यह बाबा आमटे के आत्म-विश्वास और संकल्प शक्ति का प्रतीक है। घने जंगल और पथरीली जमीन पर झोंपड़ी बना कर कार्य आरम्भ करने वाले इस 'अभय साधक' के साथ उनकी धर्म पत्नी साधना ताई ही नहीं बल्कि उनके दोनों बेटे भी हैं और साथ हैं हजारों आदिवासी तथा कुष्ठ रोगी। 'आनन्दवन' आज एक तीर्थ है जहां कुष्ठ रोगी और अन्धे-बहरों का न केवल उपचार होता है, अपितु उन्हें अपने पांव पर खड़े होने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। आज 'आनन्दवन' में पक्की इमारतें हैं, बिजली है, बसें और बैंक हैं, स्कूल-कॉलेज और अस्पताल हैं।

अपंग व कुष्ठ रोगी जो समाज पर बोझ हैं, भीख मांग कर गुजारा करते हैं, उन्हें 'आनन्दवन' में काम सिखाया जाता है, आत्मनिर्भर बनाया जाता है। अपनी रोटी स्वयं कमाकर वे आत्म-सम्मान के साथ जीते हैं। बाबा आमटे का अपंग लोगों को दिया गया मन्त्र है - दान नष्ट करता है, कार्य निर्माण करता है। इसलिए भीख मत मांगो। जो अंग बचे हैं उनसे काम करो, आत्मनिर्भर बनो।

भारत सरकार ने बाबा आमटे को 'राष्ट्रभूषण' तथा 'पद्मश्री' से अलंकृत किया है। बहुत से अन्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ उन्हें डेमियन - डटन अवार्ड भी मिला है।

बाबा आमटे ने कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं - 'ज्वाला और फूल', 'सार्वजनिक संस्कारों का संकलन' तथा 'उज्ज्वल भविष्य के लिए'।

लोगों के उज्ज्वल कल के लिए अपने “आज की आहुति देने वाले युवकों की आज आवश्यकता है। आनन्दवन जाने पर, वहां रहने पर निराशा दूर भागती है। मन में विश्वास जागता है। समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।”

वृद्ध बाबा आमटे को जब किसी ने विश्राम करने की सलाह दी तो बोले -

“राम काजु कीन्हें बिनु मोही कहां विश्राम।”

अभ्यास

1. कॉलेज की स्थापना क्यों आवश्यक थी ?
2. बाबा आमटे का सुझाव डॉ० स्नेलमन को कैसा लगा ?
3. छः महीने बाद डॉ० स्नेलमन ने भारत आकर क्या देखा ?
4. बाबा आमटे का पहला प्रयोग क्या था ? यह कैसे सफल हुआ ?
5. ‘आनंदवन’ से आप क्या अर्थ लगाते हैं ?
6. बाबा आमटे के पास क्या था जिसे ‘अलादीन का चिराग’ कहा गया है ?
7. आरंभिक आनंदवन और आज के आनंदवन की तुलना करो।
8. बाबा आमटे के जीवन से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

